पैग़म्बरे-इस्लाम
एक आदर्श चरित्र

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

पैग़म्बरे-इस्लाम
एक आदर्श चरित्र

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

इस्लामी मर्कज़, नई दिल्ली

पैग़म्बरे-इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम 22 अप्रैल 571 ई. को अरब में पैदा हुए और 8 जून 632 को आपका देहावसान हुआ. आप निहायत तन्दुरुस्त और ताक़तवर थे. बचपन से यह हाल था कि जो देखता कह उठता: इस लड़के का भविष्य शानदार है.

बड़े हुए तो आपकी शख़्सियत और ज़्यादा नुमायां व आकर्षक हो गई. देखने वालों पर आपका बड़ा असर पड़ता, आप इतने विनम्र, कोमल और मृदुभाषी थे कि थोड़ी देर भी कोई आपके पास रहता, आपसे मुहब्बत करने लगता.

सच्चाई, सहनशीलता, बर्दाश्त, ईमानदारी, इंसाफ-पसंदी, अच्छा सलूक-ये ख़ूबियां आपके अन्दर कमाल दर्जे की थीं. आप इंसानी बुलन्दी और मानवीय पराकाष्ठा की बेहतरीन मिसाल थे, जिसको मनोवैज्ञानिक भाषा में एक संतुलित व्यक्तित्व (Balanced Personality) कहा जाता है.

दाउद बिन हुसैन कहते हैं कि अरब के लोग आमतौर से यह कहते हुए सुने जाते थे कि मुहम्मद बिन अब्दुल्ला इस शान से जवान हुए कि आप अपनी क़ौम में सबसे ज्यादा शिष्टाचार व अख़लाक वाले, पड़ौसियों की परवाह करने वाले, सहनशील, सच्चे, अमानतदार, झगड़े से दूर रहने वाले, अश्लीलता और बेशर्मी से दूर रहने वाले थे. इसी वजह आपकी क़ौम ने आपका नाम 'अल-अमीन' (सच्चा व अमानतदार) रखा था. (ख़साइसे-कुबरा, भाग 1, पृष्ठ 91)

25 साल की उम्र में जब आपने शादी की तो इस मौक़े पर आपके चाचा अबूतालिब ने निकाह का खुतबा पढ़ते हुए कहा था:

मेरे भतीजे मुहम्मद बिन अब्दुल्ला का मुक़ाबला जिस शख़्स से भी किया जाए वह शराफ़त, सज्जनता, बुज़ुर्गी, अक़्ल और बुद्धि में उससे बढ़ जाएगा. ख़ुदा की क़सम उसका भविष्य महान होगा और उसका रुतबा बुलन्द होगा.

अबूतालिब ने ये शब्द उन अर्थों में नहीं कहे थे, जिन अर्थों में बाद में इतिहास ने उसे सच्चा साबित किया. उन्होंने यह बात पूरी सांसारिक अर्थों में कही थी, दुनियावी लिहाज़ से कही थी. उनका मतलब यह था कि जो शख़्स कुदरती तौर पर ऐसी आकर्षक शख़्सियत लेकर पैदा हुआ हो, जो मुहम्मद बिन अब्दुल्ला में दिखाई देती है, वह क़ौम में ऊंची जगह हासिल करता है और दुनिया के बाज़ार में उसकी बड़ी क़ीमत मिल कर रहती है. ऐसे आदमी की असाधारण योग्यताएं उसकी तरक्क़ी और कामयाबी की पक्की गारंटी होती है.

पैग़म्बरे-इस्लाम के लिए ये संभावनाएं निश्चित रूप से मौजूद थीं. आप अपनी ख़ूबियों और योग्यताओं की बड़ी से बड़ी सांसारिक क़ीमत वसूल कर सकते थे. आप मक्का के एक ऊंचे खानदान में पैदा हुए. हालांकि आपको अपने बाप से विरासत में सिर्फ एक ऊंटनी और एक ख़ादिमा (दासी) मिली थी, पर आपकी शानदार पैदायशी ख़ूबियों ने मक्का की सबसे मालदार महिला को प्रभावित किया. 25 माल की उम्र में आपका उनसे निकाह हो गया था. यह महिला एक व्यापारी ख़ानदान की विधवा थीं. उनसे आपको न सिर्फ माल व जायदाद मिली, बल्कि अरब में और अरब के बाहर व्यापार का ज़बरदस्त मैदान भी हाथ आया. अब आपके लिए सकून, बेफ़िक्री और कामयाबी की ज़िंदगी जीने के सारे मौके उपलब्ध हो चुके थे. लेकिन आपने उनको छोड़कर एक और ही चीज़ को चुना. आपने जानते-बूझते अपने आपको एक ऐसी राह पर डाल दिया, जो सिर्फ दुनिया की बरबादी की तरफ ले जाती थीं. ख़दीजा से निकाह से पहले आप अपनी गुज़र-बसर के लिए कुछ काम-धंधा कर लेते थे. अब वह भी छूट गया. अब आप जी-जान से उस तलाश में जुट गए, जिसकी जुस्तजू और तड़प आपको बचपन से थी. यह कि सच्चाई क्या है? आप घंटों बैठे हुए ज़मीन और आसमान पर ग़ौर करते रहते, विचारों में ध्यान-मग्न रहते. मक्का के बड़े लोगों में अपने सम्बन्ध बढ़ाने और उनकी सभा-सोसायटी में अपनी जगह बनाने के बजाय आपने

यह किया कि रेगिस्तानों और पहाड़ों को अपना साथी बना लिया. मक्का से तीन मील के फासले पर एक पर्वत-श्रंखला है, जिसमें एक गुफा है जिसका नाम हिरा है. आप सत्तू और पानी लेकर वहां चले जाते. पहाड़ के शांत और सुनसान माहौल में ज़िन्दगी की हक़ीकत पर ग़ौर करते. ज़मीन और आसमान को पैदा करने वाले से प्रार्थना करते, दुआएं मांगते कि मेरे रब, तू अपने आपको मेरे ऊपर प्रकट कर दे, ज़ाहिर कर दे! सच्चाई क्या है, मुझको बता दे. जब पानी की मश्क़ ख़ाली हो जाती और सत्तू ख़त्म हो जाता तो घर वापस आते, ताकि दोबारा खाने-पीने का सामान लेकर क़ुदरत के उस माहौल में लौट जाएं, जहां रेगिस्तान और पेड़ थे, पहाड़ और आसमान की शांत फ़िज़ा थी. आपका बेचैन मन दुनिया के हंगामें में अपने सवाले का जवाब न पा सका था. अब आपने प्रकृति और कुदरत की खामोश दुनिया को अपना साथी बनाया था कि शायद वह इसका कुछ जवाब दे सके.

हालांकि आपकी ज़िन्दगी पैग़म्बरी मिलने से पहले भी इसी क़िस्म की ज़िन्दगी थी, लेकिन वह तो पूरी तरह उनका स्वभाव था. वह स्वभाव तो उनकी शख़्सियत का हिस्सा था. अब सच्चाई की खोज ने इस स्वभाव में एक चेतना, एक सजगता, एक शऊर भर दिया था. जो किरदार और चरित्र अब तक अवचेतन और स्वाभाविक तकाजे के तहत प्रकट होता था, वह अब एक सोचे-समझे ज़ेहन का संकल्प बन गया था. यह किसी ख़ुदा के बन्दे का वह मकाम है, वह स्तर है, जहां सांसारिकता और दुनियावी तकाज़े बेमानी व मूल्यहीन हो जाते हैं— या फिर सिर्फ ज़िन्दा रहने की बुनियादी ज़रूरत तक ही उनका महत्व रह जाता है. उसका जिस्म इसी ज़ाहिरी दुनियां में होता है, पर मन के स्तर पर वह एक और ही दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारने लगता है.

एक हदीस में पैग़म्बरे-इस्लाम ने कहा:

> अक़्लमंद आदमी के लिए ज़रूरी है कि उस पर कुछ घड़ियां गुज़रें—
>
> ऐसी घड़ी जब कि वह अपने रब से बातें करे, ऐसी घड़ी जब कि वह अपनी जांच-परख करे (यानी आत्मविश्लेषण, आत्मचिंतन या स्वध्याय) ऐसी घड़ी जब कि वह ख़ुदा की सृष्टि पर ग़ौर करे और ऐसी घड़ी जब कि वह खाने-पीने की ज़रूरतों के लिए वक़्त निकाले.

यानी खुदा का वफ़ादार बन्दा वह है, जिसके दिन-रात इस तरह गुजरें कि कभी उसकी बेचैनी व तड़प उसे खुदा से इतना करीब कर दे कि वह अपने रब से कानाफूसी (सरगोशी) करने लगे. कभी 'हिसाब वाले दिन' में सब के सामने खड़े होने का डर उसके ऊपर इतना छा जाए कि वह दुनियां ही में अपना हिसाब करने लगे. कभी जगत में खुदा की कारीगरी को देख कर वह उसमें इतना खो जाए कि उसके अन्दर उसको ख़ुदा का नूर, ख़ुदा का जलवा और खुदा का सौन्दर्य नज़र आने लगे, खुदा का अस्तित्व उसके सामने प्रत्यक्ष होने लगे.

तो इस तरह खुदा से मुलाकात, अपने आप से मुलाकात और खुदा की कायनात (सृष्टि) से मुलाक़ात में उसकी घड़ियां गुज़र रही हों. और शारिरिक तकाजे को पूरा करने के लिए वह खाने-पीने के लिए भी वक्त निकाल लिया करे.

ये शब्द दूर के किसी इन्सान का परिचय नहीं दे रहे हैं, बल्कि इसमें खुद पैग़म्बरे-इस्लाम की अपनी शख़्सियत बोल रही है. इससे ज़ाहिर होता है कि आपके जिस्म के अन्दर जो समर्पित रूह थी, उसमें हर वक़्त किस किस्म के तूफान उठते रहते थे. आपकी ज़िन्दगी किस तरह की पीड़ा और किस तरह की अनुभूति के बीच से गुज़र रही थी. सच्चाई यह है कि जो आदमी खुद इन घड़ियों का अनुभव न कर रहा हो वह कभी इतने ऊंचे शब्दों में इस बात को नहीं कह सकता. ये एक ऐसी रूह से निकली हुई वाणी है, जिसने इन अनुभूतियों को समग्र रूप में पाया था. जिसको वह शब्दों के माध्यम से दूसरों पर खोल रहा था.

पैग़म्बरी मिलने से पहले पैग़म्बरे-इस्लाम को मौजूदा दुनिया अपनी कमियों और सीमाओं के साथ बेमानी मालूम होती थी, लेकिन जब ख़ुदा ने आप पर यह सच प्रकट कर दिया कि इस दुनिया के सिवा एक और दुनिया है, जो कामिल, सम्पूर्ण और अजर-अमर है और वही दुनिया इन्सानियत का असली घर है तो ज़िन्दगी और जगत दोनों आपके लिए बामानी व सार्थक हो गए. अब आपने ज़िन्दगी की वह सतह पा ली, जहां आप जी सकते थे, जिसमें आप अपना दिल लगा सकते थे. अब आपको एक ऐसी वास्तविक दुनिगा मिल गई, जिससे अपनी उम्मीदों, तमन्नाओं और आकांक्षाओं को जोड़ सकें; जिसे

सामने रख कर अपनी ज़िन्दगी की योजना बना सकें.

इसी के लिए कहा गया कि 'दुनिया आखिरत की खेती' है. इसको आजकल की शब्दावली में आख़िरत-रुखी ज़िन्दगी या परलोकमुखी जीवन (Akhirat Oriented Life) कहा जा सकता है. ऐसा आदमी अपना जीवन-दर्शन ही ऐसा बना लेता है कि वह आख़िरत को अपना असली मसला समझने लगता है. उसके जीवन में आख़िरत ही सबसे महत्वपूर्ण विषय हो जाता है. वह सचेत हो जाता है कि दुनिया हमारी मंज़िल नहीं है बल्कि वह सिर्फ रास्ता है. वह आखिरत के भविष्य की तैयारी का एक आरम्भिक पड़ाव मात्र है. जिस तरह एक संसारजीवी आदमी की तमाम कोशिशें, तमाम गतिविधियां सांसारिक जोड़-तोड़ के गिर्द घूमती हैं, उसी तरह ख़ुदा के एक सच्चे बन्दे की पूरी ज़िन्दगी का रुख़ आख़िरत की तरफ़ हो जाता है. हर मामले में वह इस ढंग से सोचता है कि आख़िरत में उसका अंजाम क्या होगा. खुशी हो या ग़म, कामयाबी हो या नाकामी, ज़बरदस्ती की हालत हो या ज़ोरावरी की, तारीफ़ की जा रही हो या आलोचना, ग़ुस्से का मौक़ा हो या मुहब्बत का, हर हालत में आख़िरत का ध्यान उसे राह दिखाता है. यहां तक कि ऐसा वक्त आता है, जब आखिरत का चिन्तन उसके अवचेतन व 'लाशऊर' का हिस्सा बन जाता है. हालांकि अब भी वह एक लौकिक मानव होता है, पर उसका ज़ेहन उन्हीं बातों के लिए प्रतिबद्ध रहता है, उन्हीं बातों से सरोकार रखता है. जो आखिरत से ताल्लुक रखने वाली हों. जिन बातों में आखिरत का कोई पहलू न हो उनसे उसकी दिलचस्पी इतनी कम हो जाती है कि कभी-कभी उसे कहना पड़ता है– "तुम अपने दुनिया के मामलों को मुझसे ज़्यादा जानता हो"

इस हकीकत की हैसियत महज़ एक बौद्धिक खोज की नहीं है. इसको पाने के बाद आदमी के जीने की सतह बदल जाती है. आदमी कुछ से कुछ हो जाता है. इसकी बेहतरीन मिसाल ख़ुद पैगम्बरे-इस्लाम का व्यक्तित्व है. आपकी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा सबक यह है कि जब तक जीने की सतह न बदले, अमल व कर्म की सतह नहीं बदल सकती.

पैगम्बरे-इस्लाम ने जब यह हक़ीकत पाई तो वह उनकी पूरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा मसला बन गया जिस जन्नत की खबर आप दूसरों को दे रहे

थे, उसके आप सबसे बड़े आकांक्षी बन गए और जिस जहन्नुम से दूसरों को डरा रहे थे, उससे आप ख़ुद सबसे ज़्यादा डरने लगे. आपका यह अन्दरूनी तूफान बार-बार दुआ और अस्तग़फ़ार (ईश्वर से प्रार्थना और क्षमा याचना) के रूप में अभिव्यक्त होता. आपके जीने की सतह आम लोगों से कितनी अलग थी, इसका अंदाजा चंद घटनाओं से होगा.

> उम्मे-सलमा का बयान है कि नबी सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम उनके घर में थे. आपने ख़ादिमा (दासी) को बुलाया. उसने आने में देर की. आपके चेहरे पर गुस्सा ज़ाहिर हो गया. उम्मे-सलमा ने पर्दे के पास जाकर देखा तो ख़दिमा को खेलते हुए पाया. उस वक़्त आपके हाथ में एक मिस्वाक (दातुन) थी. आपने ख़ादिमा से कहा : अगर क़यामत के दिन मुझे बदले का डर न होता तो मैं तुझको इस मिस्वाक से मारता.

बदर की लड़ाई (रमज़ान, सन् 2 हिज़री) के बाद जो लोग कैदी बन कर आए, वे आपके बदतरीन दुश्मन थे. लेकिन आपने उनके साथ बेहतरीन सलूक किया. उन कैदियों में एक व्यक्ति सुहैल बिन अमरू था, जो निहायत उत्तेजनापूर्ण भाषण देने वाला था. और तमाम मजमों में आपके खिलाफ बेहूदा तकरीरें किया करता था. उमर फारूक ने राय दी कि इसके नीचे के दो दांत उखाड़ दिए जाएं ताकि इसका भाषण देने का जोश खत्म हो जाए. इस पर आपने कहाः

> 'ख़ुदा मेरा चेहरा क़यामत में बिगाड़ देगा, हालांकि मैं खुदा का रसूल हूं.''

पैग़म्बरे-इस्लाम आम इन्सानों की तरह एक इन्सान थे. ख़ुशी की बात से आपको खुशी होती थी और दुख की बात से आप दुखी हो जाते थे. लेकिन आपकी खुदा-परस्ती आपको खुदा के तय किए हुए दायरे से बाहर नहीं जाने देती थी.

पैगम्बरे-इस्लाम की आख़िरी उम्र में मारिया क़िब्तिया से एक लड़का पैदा हुआ. यह लड़का ख़ूबसूरत और तन्दुरस्त था. इसका नाम आपने अपने सबसे बुजुर्ग वंशज (पैग़म्बर इब्राहीम) के नाम पर इब्राहीम रखा. अबू राफे'

ने जब इब्राहीम के जन्म की खबर आपको सुनाई तो आप इतना खुश हुए कि अबू राफे' को एक गुलाम इनाम में दे दिया.आप इब्राहीम को गोद में लेकर खिलाते और प्यार करते. अरब के रिवाज के मुताबिक इब्राहीम को एक दाई उम्मे बरदा बिन्त - अल-मनज़र बिन ज़ैद अंसारी के हवाले कर दिया गया, ताकि वह दूध पिलाएं. यह दाई एक लोहार की पत्नी थी. उनके छोटे से घर में अक्सर भट्टी का धुंआ होता रहता था. आप लड़के को देखने के लिए लोहार के घर जाते और वहां धुंआं आपकी आंख और नाक में घुसता रहता. और आप बहुत नाज़ुक तबियत के होने के बावजूद उसको बर्दाश्त करते. इब्राहीम अभी डेढ़ साल के हुए थे कि हिजरत के दसवें साल (जनवरी 632) में उनका देहांत हो गया. आप बेटे की मौत को देख कर रोने लगे.

इन घटनाओं में पैगम्बरे-इस्लाम एक आम इन्सान की तरह दिखाई देते हैं. उनके जज़्बात, उनकी भावनाएं, उनकी हसरतें और आकांक्षाएं वैसी ही हैं जैसी एक आम बाप की होती हैं. लेकिन इसके बावजूद ख़ुदा का दामन आपके हाथ से छूट नहीं पाया. आप दुखी हैं पर आपके मुख से ये शब्द निकल रहे हैं:

> ख़ुदा की क़सम, ऐ इब्राहीम, हम तुम्हारी मौत से दुखी हैं. आंख रो रही है, दिल दुखी है, पर हम कोई ऐसी बात नहीं कहेंगे जो रब को नापसंद हो.

जिस दिन इब्राहीम का देहांत हुआ, इत्तफाक़ से उसी दिन सूरज-ग्रहण पड़ा. पुराने ज़माने में ऐसा माना जाता था कि सूर्य-ग्रहण और चन्द्र-ग्रहण किसी की मौत के कारण होता है. मदीने के मुसलमान कहने लगे कि यह सूरज-ग्रहण पैगम्बर के बेटे की मौत के कारण हुआ है. आपको यह बात बहुत बुरी लगी क्योंकि यह बात इन्सान की विनम्र हैसियत के खिलाफ थी. आपने लोगों को जमा करके भाषण दिया और कहा:

> सूरज और चांद में किसी इन्सान की मौत से ग्रहण नहीं लगता. ये तो अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियां हैं. जब तुम ऐसा देखो तो नमाज़ पढ़ो.

एक और घटना इतिहास में इन शब्दों में दर्ज है:

> एक बार आप सफर में थे. आपने अपने साथियों को एक.बकरी

तैयार करने का हुक्म दिया. एक शख़्स बोला: मैं इसको ज़िबह करूंगा. दूसरे ने कहा: मैं इसकी खाल उतारूंगा. तीसरे ने कहा: मैं इसको पकाऊंगा. इस पर आपने कहा: मैं लकड़ी जमा करूंगा. लोगों ने कहा: ऐ ख़ुदा के रसूल, हम सब काम कर लेंगे. (यानी आप कुछ न करें) आपने फ़रमाया: में जानता हूं कि तुम लोग कर लोगे, पर मैं इम्तियाज़ (छोटे बड़े में भेद) को पसंद नहीं करता. अल्लाह को यह पसंद नहीं कि उसका कोई बन्दा अपने साथियों के बीच इम्तियाज़ के साथ (यानी विशिष्ट बन कर) रहे.

आप अपने को खुदा का एक मामूली बन्दा ही समझते थे. आपने फ़रमाया:

खुदा की क़सम मैं नहीं जानता, खुदा की क़सम मैं नहीं जानता, हालांकि मैं खुदा का रसूल हूं, कि क्या किया जाएगा मेरे साथ और क्या किया जाएगा तुम्हारे साथ. (बुख़ारी)

अबू ज़र गफ्फारी बताते हैं, एक दिन मैं एक मुसलमान (सहाबी) के पास बैठा हुआ था. उनका रंग काला था. किसी बात के लिए मैंने उन्हें पुकारा तो मेरे मुख से निकल गया: "ऐ काले रंग वाले!" नबी सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने सुना तो बहुत नाराज़ हुए. और बोले: "पैमाना पूरा भरो! पैमाना पूरा भरो!"

इस चेतावनी के बाद अबू ज़र गफ्फ़ारी को अपनी ग़लती का अहसास हुआ. वह पश्चात्ताप और गुनाह के डर से कांप उठे और ज़मीन पर लेट गए. फिर उस व्यक्ति से उन्होंने कहा, "खड़ा हो और मेरे चेहरे को अपने पैरों से मसल दे."

एक दिन नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक मालदार मुसलमान को देखा कि वह अपने पास बैठे हुए एक ग़रीब मुसलमान से बचने की कोशिश कर रहा है और अपने कपड़े समेट रहा है. आपने फ़रमाया: 'क्या तुम को डर है कि इसकी गरीबी तुमसे लिपट जाएगी?"

मदीना में बाकायदा इस्लामी हुकूमत क़ायम हो चुकी है. और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शासनाध्यक्ष हैं. उस ज़माने में आपको एक बार

एक यहूदी से क़र्ज़ लेने की जरूरत पड़ी. कर्ज अदा करने की मुद्दत तय हुई थी. अभी उसमें कुछ दिन बाकी थे कि यहूदी तक़ाज़ा करने के लिए आ गया. उसने आपके कंधे की चादर उतार ली. और कुर्ता पकड़ कर कठोर शब्दों में बोला, "मेरा कर्ज़ अदा करो." फिर कहने लगा, "अब्दुल मुत्तलब की औलाद बड़ी कर्ज़-चोर है!"

हज़रत उमर फारुक़ उस समय आपके साथ थे. यहूदी की बदतमीजी पर आपको बड़ा गुस्सा आया. उन्होंने उसको डांटा. लगता था कि वह उसे मारने लगेंगे. पर पैग़म्बरे-इस्लाम सिर्फ मुस्कराते रहे. यहूदी से सिर्फ़ इतना कहा, "अभी तो वादे में तीन दिन बाक़ी हैं," फिर उमर फारुक़ से फ़रमायाः

> उमर ! मैं और यह यहूदी तुमसे एक और बरताव के ज़्यादा ज़रूरतमन्द थे. मुझसे तुम बेहतर अदायगी के लिए कहते और उससे बेहतर तक़ाजे के लिए.

फिर उमर फ़ारुक से कहा कि जाओ फलां व्यक्ति से खजूरें लेकर इसका कर्ज अदा कर दो. और बीस साअ (लगभग 40 किलो) ज़्यादा देना, क्योंकि तुमने उसे झिड़का था.

पैगम्बरे-इस्लाम को अपनी ज़िन्दगी में इतनी कामयाबी मिली कि आप अरब से लेकर फिलिस्तीन तक के इलाके के शासक बन गए. ख़ुदा का रसूल होने के कारण आपकी ज़बान क़ानून का दर्जा रखती थी. आप ऐसे लोगों के बीच थे जो आपकी इज़्ज़त और आपका आदर-सम्मान इतना ज़्यादा करते थे जो कभी किसी इन्सान को नहीं मिला. हुदैबिया की बातचीत के मौक़े पर अरूह बिन मसऊद,क़ुरैश के राजदूत की हैसियत से आए तो वह यह देख कर हैरान रह गए कि जब आप वज़ू करते हैं तो लोग दौड़ पड़ते हैं कि आपका ग़साला (वज़ू का पानी) ज़मीन पर गिरने से पहले हाथ पर ले लें और उसको तबर्रुक (प्रसाद) के तौर पर जिस्म पर मल लें. अन्स कहते हैं कि बेहद मुहब्बत के बावजूद हम लोग आंख भर कर आपको देख नहीं सकते थे. मुग़ीरा कहते हैं कि किसी सहाबी (साथी) को आपके घर पर दस्तक देने की ज़रूरत होती तो वह नाख़ून से दरवाज़ा खटखटाता था. जाबिर बिन समरा कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम सुर्ख़ चादर ओढ़ कर चांदनी

रात में सो रहे थे; मैं कभी चांद को देखता, कभी आपको! आख़िर मैंने यही फैसला किया कि आप चांद से ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं. हनैन में जब जंग के शुरू में मुस्लिम फौज की हार हुई और विरोधी फ़ौज ने आपके ऊपर तीरों की बारिश शुरू कर दी तो आपके साथियों ने आपको घेरे में ले लिया. वे सारे तीर अपने हाथ और जिस्म पर इस तरह रोकते रहे जैसे वह इन्सान नहीं, लकड़ी हैं. यहां तक कि कुछ साथियों का यह हाल हुआ कि उनके शरीर पर साही के कांटे की तरह तीर लटकने लगे थे.

इस तरह की श्रद्धा और अकीदत आदमी के मिज़ाज को बिगाड़ देती है. वह अपने को दूसरों से बड़ा समझने लगता है. पर आप लोगों के बीच बिल्कुल आम इन्सान की तरह रहते. कोई कटु आलोचना, कोई तल्ख़ और भड़का देने वाली बात आपको आपे से बाहर करने वाली साबित न होती. सही हदीस में हज़रत अन्स का बयान है कि एक देहाती आया. उसने आपकी चादर को ज़ोर से खींचा, फिर बोला, "मुहम्मद, मेरे ये दो ऊंट हैं. इनकी लाद का सामान मुझे दो, क्यों कि जो माल तेरे पास है, वह न तेरा है, न तेरे बाप का है." आपने फ़रमाया, "माल तो अल्लाह का है और मैं उसका बन्दा हूं." फिर देहाती से पूछा, "जो बरताव तुमने मुझसे किया, उस पर तुम डरते नहीं?" वह बोला, "नहीं." आपने पूछा, "क्यों?" उसने कहा, "मुझे मालूम है कि तुम बुराई का बदला बुराई से नहीं देते." आप यह सुनकर हंस पड़े और हुक्म दिया कि देहाती को एक ऊंट के बोझ की जौ और एक की खजूरें दी जाएं.

आप पर ख़ुदा का डर इस कदर छाया रहता था कि आप विनम्रता, भक्ति भाव और "बन्दगी" की तस्वीर बने रहते थे. बहुत कम बोलते. चलते तो झुक कर चलते. अपनी आलोचना से कभी नाराज न होते. कपड़े पहनते तो कहते कि मैं ख़ुदा का बन्दा हूं और बन्दों की तरह लिबास पहनता हूं. खाना खाते तो अदब के साथ बैठकर खाते और फरमाते कि मैं बन्दों की तरह खाना खाता हूं. यानी मैं भी एक आम इन्सान और मामूली बन्दा ही हूं.

इस बात के प्रति आप बहुत सजग रहते थे कि लोग भी उन्हें ख़ुदा का मामूली बन्दा ही समझें. एक बार एक साथी ने इसी बात पर आपसे कहा, "जो अल्लाह चाहें और जो आप चाहें." यह सुनते ही आपके चेहरे का रंग

बदल गया. आपने तमतमा कर कहा, "क्या तुमने मुझे अल्लाह के बराबर कर दिया? तुमको इस तरह कहना चाहिए: वो होगा जो अल्लाह चाहे".

इसी तरह आपके एक साथी ने भाषण करते हुए कहा, "जो अल्लाह और रसूल का हुक्म माने वह सीधे रास्ते पर है और जो इन दोनों का हुक्म न माने वह गुमराह और भटका हुआ है."

यह सुनकर आपने फरमाया, "तू क़ौम का बुरा ख़तीब (वक्ता) है." यानी आपको यह बात पसन्द नहीं आई कि किसी बात में अल्लाह और रसूल का नाम इस तरह बराबरी से लिया जाए जैसे दोनों का बराबर का दर्जा हो.

पैग़म्बरे-इस्लाम के यहां तीन लड़के पैदा हुए, जो बचपन में ही चल बसे. चार बेटियां बड़ी उम्र तक पहुंची. चारों बेटियां आपकी पहली पत्नी हज़रत ख़दीजा से जन्मीं. हज़रत फ़ातिमा आपकी सबसे छोटी बेटी थीं: आप हज़रत फातिमा से बेहद मुहब्बत करते थे. किसी सफर से वापस लौटते तो मस्जिद में दो रकअत् नमाज़ पढ़ने के बाद सबसे पहले हज़रत फ़ातिमा के घर जाते. उनके हाथ और माथे को चूमते. हज़रत आइशा (आपकी सबसे छोटी पत्नी) से जमीं' बिन उमैर ने पूछा: नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सबसे ज़्यादा प्यारा कौन था? उन्होंने जवाब दिया, "फ़ातिमा".

लेकिन पैगम्बरे-इस्लाम की पूरी ज़िन्दगी आख़िरत में ढल गई थी. इसलिए औलाद से मोहब्बत का अर्थ भी आपके लिए दूसरा था. एक किताब को छोड़कर हदीस की सभी प्रामाणिक किताबों में एक घटना बयान की गई हैं; वह यह कि हज़रत फ़ातिमा के प्रति हज़रत अली ने एक बार इब्ने अब्दुल वाहिद से कहा: "मैं तुम को फातिमा की एक बात सुनाऊं, जो सारे कुन्बे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सबसे प्यारी थीं?" इब्ने अब्दुल वाहिद ने कहा, "हाँ".

हज़रत अली ने कहा, "फ़ातिमा का यह हाल था कि चक्की पीसतीं तो हाथ में छाले पड़ जाते, पानी की मश्क उठाने की वजह से गरदन में निशान पड़ गया था. झाड़ू देतीं तो कपड़े मैले हो जाते. उन्हीं दिनों नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास कुछ ख़ादिम (दास) आये. मैंने फ़तिमा से कहा: "तुम अपने पिता के पास जाओ और अपने लिए एक ख़ादिम मांगो. फातिमा गईं,

पर वहां लोगों की भीड़ की वजह से वह आप से मिल न सकीं. अगले दिन नबी सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम हमारे घर आये. और पूछा कि क्या बात थी? फ़ातिमा चुप हो गईं. मैंने पूरा किस्सा बताया और यह भी बताया कि मैंने ही फ़ातिमा को आपके पास भेजा था. पूरी बात सुनने के बाद नबी सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम ने फरमाया:

> ऐ फातिमा, खुदा से डरो. अपने रब के फर्ज अदा करो. अपने घर वालों के काम करो. जब बिस्तर पर जाओ तो 33 बार ख़ुदा की 'तस्बीह' करो, 33 बार ख़ुदा की 'हम्द' करो. 34 बार ख़ुदा की 'तकबीर' करो.यह पूरा सौ हो गया. यह तुम्हारे लिए ख़ादिम से बेहतर है.
>
> (यानी 33 बार ख़ुदा की प्रशंसा व तारीफ करो अर्थात् 'सुबहानल्लाह' कहो; यानी हर प्रकार की तारीफ अल्लाह के लिए है. 33 बार ख़ुदा का गुणगान करो अर्थात् 'अलहम्दोलिल्लाह' कहो, यानी हर प्रकार की स्तुति और सराहना खुदा ही के लिए है. 33 बार खुदा की महानता बयान करो अर्थात् 'अल्लाहो अकबर' कहो, यानी अल्लाह महानतम है, सबसे बड़ा है.)

हज़रत फ़ातिमा ने यह सुनकर कहा, "मैं ख़ुदा और रसूल से इस पर ख़ुश हूं." हज़रत अली कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बस यही जवाब दिया और फ़ातिमा को ख़ादिम नहीं दिया.

पैग़म्बरे-इस्लाम पर जो सच्चाई प्रकट की गई थी वह यह थी कि यह जगत बिना ख़ुदा के नहीं है. इसका एक ख़ुदा है और वही उसका बनाने वाला, पालने वाला और मालिक है. सारे इन्सान उसके बन्दे (दास व भक्त) हैं. और सारे इन्सान अन्ततः उसी के सामने जवाबदेह हैं. मरने के बाद आदमी ख़त्म नहीं हो जाता बल्कि दूसरी दुनिया में एक मुस्तक़िल और अनन्त ज़िन्दगी शुरू करने के लिए दाख़िल हो जाता है. वहां नेक आदमियों के लिए जन्नत का आराम है और बुरे लोगों के लिए जहन्नुम की भड़कती हुई आग.

ख़ुदा ने पैगम्बरे-इस्लाम को जब यह सच्चाई बताई तब आपको यह

हुक्म भी दिया कि सारे इन्सानों को इस सच्चाई से आगाह करो, सबको यथार्थ के प्रति सचेत करो. मक्का के किनारे 'सफ़ा' नाम की एक चट्टान थी, जो उस जमाने में लोगों के मज्मे को सम्बोधित करने के लिए स्टेज का काम देती थी. आपने सफ़ा पर चढ़कर लोगों को पुकारा. लोग जमा हो गए तो आपने तक़रीर की. आपने ख़ुदा की बढ़ाई बयान करने के बाद कहा:

> ख़ुदा की क़सम तुम्हें मरना है, जिस तरह तुम सोते हो और फिर तुमको उठना है, जिस तरह तुम जागते हो. और ज़रूर तुमसे हिसाब लिया जाएगा. जो तुम करते हो. और फिर अच्छे काम का अच्छा बदला है और बुरे काम का बुरा बदला. और इसके बाद या तो हमेशा के लिए बाग़ है या हमेशा के लिए आग.

अगर दुनिया और ज़माने के खिलाफ जाकर निजी तौर पर कोई इन्सान कोई तरीक़ा या मार्ग अपनाता है, उस समय भी हालांकि क़दम-क़दम पर मुश्किलें-मुसीबतें आती हैं. फिर भी ये मुसीबतें हिंसक और घातक नहीं होतीं. ये मुसीबतें आदमी के जज़्बात और भावनाओं को ठेस पहुंचाती हैं, पर आदमी के जिस्म को ज़ख़्मी नहीं करतीं. यह ज़्यादा से ज़्यादा आदमी के धैर्य या ख़ामोश सब्र का इम्तहान होती हैं. पर उस वक़्त स्थिति बिल्कुल बदल जाती है, जब आदमी ज़माने के ख़िलाफ एक आवाज़ का प्रणेता बनकर खड़ा हो जाता है; एक हक़ीकत का दावेदार और एक सच्चाई की तरफ बुलाने वाला बन जाता है. जब वह दूसरों से कहने लगता है कि यह करो और वह न करो. पैगम्बरे-इस्लाम सिर्फ़ ख़ुदा के एक सच्चे बन्दे नहीं थे, बल्कि ख़ुदा के पैग़ाम को दूसरों तक पहुंचाने का मिशन भी आपको सौंपा गया था.

आपकी इस दूसरी हैसियत ने आपको पूरी अरब क़ौम से टकरा दिया. भूखे रहने से लेकर जंग तक के कठिन हालात से आपको गुज़रना पड़ा. पर 23 साल की पूरी ज़िन्दगी में आप पूरी तरह इन्साफ़, संयम और परहेज़गारी पर क़ायम रहे. इसका कारण यह नहीं था कि आपके अन्दर इन्सानी जज़्बात या मानवीय दुर्बलता नहीं थी. असली कारण यह था कि ख़ुदा के डर ने आपको पावन्द वना रखा था.

हिजरत के तीसरे साल मक्का के विरोधियों ने मदीने पर चढ़ाई की. इसे उहद की लड़ाई कहा जाता है. इस जंग में शुरू में मुसलमानों की जीत हुई

लेकिन इसके बाद आपके कुछ साथियों की ग़लती से दुश्मनों को मौक़ा मिल गया और उन्होंने पीछे से हमला करके जंग का नक़्शा बदल दिया. यह बड़ा भयानक दृश्य था. आपके ज़्यादातर साथी लड़ाई के मैदान से भागने लगे. यहां तक कि आप हथियारबन्द दुश्मनों के घेरे में अकेले घिर गए विरोधियों का झुण्ड भूखे भेड़ियों की तरह आप की तरफ बढ़ रहा था. आपने अपने साथियों को पुकारना शुरू किया: "ख़ुदा के बन्दो, मेरी तरफ आओ. कौन है जो हमारे लिए अपनी जान कुर्बान करे. कौन है जो इन जालिमों को मुझसे हटाए वह जन्नत में मेरा दोस्त होगा."

वह कैसा भयानक समां होगा जब ख़ुदा के रसूल की जबान से इस तरह के शब्द निकल रहे थे. हालांकि आप के साथियों में से एक आपकी पुकार पर आगे बढ़ा. पर उस वक़्त इतनी ज़्यादा उथल-पुथल और अफ़रा-तफ़री थी कि आप पर जान न्यौछावर करने वाले भी आपको पूरी तरह बचाने में कामयाब न हो सके. अ़त्बा इब्न अबी विक़ास ने आपके ऊपर एक पत्थर फैंका. यह पत्थर आपको इतनी जोर से लगा कि होंठ कुचल गए और नीचे के दांत टूट गये. अब्दुल्ला इब्ने क़मीया क़ुरैश का मशहूर पहलवान था. उसने आप पर सख़्त हमला किया, जिसके नतीजे में लोहे की टोपी, (लड़ाई के दौरान पहना जाने वाला हेलमैट) की दो कड़ियां आपके गाल में घुस गईं. यह कड़ियां इतनी गहराई तक घुसी थीं कि अबू उबैदा बिन अलजर्राह ने जब उनको निकालने के लिए अपने दांतों से पकड़ कर खींचा तो अबू उबैदा के दो दांत टूट गए. एक और शख़्स अब्दुल्ला बिन शहाब ज़ोहरी ने आपको पत्थर मारा, जिससे आपका माथा जख़्मी हो गया. लगातार ख़ून बहने से आप बेहद कमज़ोर हो गए. यहां तक कि आप एक गड्ढे में जा गिरे. मैदान में जब आप देर तक दिखाई नहीं दिए तो चारों तरफ यह बात फैल गई कि आप शहीद हो गए हैं. उस दौरान आपके एक साथी की नज़र गड्ढे की तरफ़ गई. वह आपको देख कर ख़ुशी से बोल उठा, "रसूलुल्लाह यहां हैं!" आपने उंगली के इशारे से उनको मना किया कि चुप रहो, दुश्मनों को यहां मेरी मौजूदगी का पता न चलने दो."

ऐसे खौफ़नाक़ हालात में आपके मुंह से क़ुरैश के कुछ सरदारों (सूफ़ियान, सुहैल, हारिस) के लिए बद्दुआ के शब्द निकल गए. आपने कहा:

"वह क़ौम कैसे कामयाबी पाएगी, जो अपने नबी को जख़्मी करे." आपकी यह बात अल्लाह को पसन्द नहीं आई और जिबरील ख़ुदा की तरफ से यह 'वही' लेकर आए:

> तुमको कोई बात तय करने का कोई अख़्तियार नहीं. ख़ुदा या तो उनको तौबा करने की तौफ़ीक़ (समझ व पात्रता) देगा या उनको अज़ाब (यातना) देगा, क्योंकि वे ज़ालिम हैं. (आले-इमरान: 128)

ख़ुदा की तरफ से इतनी चेतावनी काफी थी. फ़ौरन आपका ग़ुस्सा ठंडा हो गया. आप जख़्मों से निढाल हैं, पर ज़ालिमों और अत्याचारियों के लिए दुआ कर रहे हैं कि ख़ुदा उन्हें हिदायत दे और रास्ता दिखाए. आपके एक साथी अब्दुल्ला बिन मसूद कहते हैं, "इस वक़्त भी जैसे नबी सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम मेरे सामने हैं. आप अपने माथे से ख़ून पोंछते जाते हैं और यह कह रहे हैं: ख़ुदा, मेरी कौम को माफ़ कर दे, क्योंकि वह नहीं जानते."

हदीस और सीरत की किताबों में ऐसी ही अनेक-अनगिनत घटनाएं हैं. उनमें से सिर्फ चन्द घटनाएं ऊपर दी गई हैं. यह घटनाएं बताती हैं कि किस तरह पैग़म्बरे-इस्लाम की जिन्दगी एक मानव चरित्र और इन्सानी किरदार का आदर्श नमूना थीं. ये घटनाएं व्यावहारिक रूप से यह सबक देती हैं कि इन्सान ख़ुदा का बन्दा है. और उसको हर हाल में ख़ुदा का बन्दा बन कर रहना चाहिए. ख़ुदा और बन्दे के बीच के रिश्ते का तकाज़ा है कि बन्दे के दिल में हर वक़्त ख़ुदा का और उसकी आख़िरत का तूफ़ान बरपा रहे. सारी क़ायनात उसके लिए ख़ुदा की याद दिलाए. वह हर घटना को ख़ुदा की नज़र से देखे. और हर चीज़ में ख़ुदा का निशान पा ले. दुनिया में कोई मामला करते वक़्त वह कभी यह न भूले कि आख़िर सारा मामला ख़ुदा के हाथ में जाने वाला है. जहन्नुम का डर उसे इन्सानों के प्रति विनम्र बना दे और जन्नत का शौक़ उसकी नज़र में दुनिया को बेमानी और अर्थहीन बना दे. ख़ुदा की बढ़ाई के ध्यान में वह इस कदर खो जाए कि अपनी बढ़ाई की कोई भी बात उसे हास्यास्पद और बेमानी लगे. अपनी आलोचना पर वह अपना संतुलन न खोए और कोई तारीफ़ उसके दिमाग़ को बिगाड़ न दे– यह है इन्सानी किरदार का वह नमूना, जो ख़ुदा के रसूल ने अपने अमल और कर्म से हमें बताया.